काव्य ग्रन्थ रत्नमाला—रत्न ९

अनुराग-वाटिका

यामे जो काँटे कहूँ मिलैं तुम्हें मतिधीर।
दूरि बीनिकै फैंकियो, बिचरत तहँ बलबीर॥

प्रणेता

वियोगी हरि

प्रकाशक

साहित्य सेवा-सदन,

बुलानाला, काशी।

प्रथमावृत्ति] श्रीकृष्णाष्टमी, १९८३ वि० [मूल्य ।-)